नैतिक निष्ठाएँ, उत्तरदायित्व और मानवीय सम्बन्ध

सम्पादक : राजकुमार

फिलॉसोफिकल प्रैक्सिस, काउन्सलिंग एण्ड
स्पिरिटुअल हीलिंग सोसाइटी, जयपुर (राज.)

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

Scanned with CamScanner

विषय-वस्तु

		पृ.सं.
	संपादकीय	
	उद्‌बोधन	
1.	मानवीय सम्बन्धों में कटुता	1-8
2.	सम्बन्धों का सच : सत्तात्मक-अनुभव में दार्शनिक प्रबोधन की भूमिका	9-16
3.	प्रकृति, मानव और नैतिक चेतना	17-24
4.	मानवीय सम्बन्धों का स्वरूप और जीवन की गुणवत्ता	25-29
5.	सम्बन्ध : प्रकार एवं स्वरूप	31-38
6.	सम्बन्धों का सच	39-43
7.	नैतिकता का आधार और सम्बन्धों का सच	45-50
8.	शुभ, नैतिक सिद्धान्त और नैतिक निर्णय	51-56
9.	Moral Commitments and Derivation of Responsibility	57-73
10.	Relationships, Moral Responsibility and Individual	75-82
11.	Commitment and Creativity	83-87
	लेखक परिचय	89

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

Scanned with CamScanner

शुभ, नैतिक सिद्धान्त और नैतिक निर्णय

मीनाक्षी श्रीवास्तव

नीतिशास्त्र के अकादमिक अध्ययन की दृष्टि से तीन प्रमुख विभाग हमारे सामने प्रस्तुत हैं। नैतिक सिद्धान्तों तथा मनुष्य को क्या करना चाहिए, के प्रश्न नियामक नीतिशास्त्र के क्षेत्र में उपस्थित होते हैं। नैतिक सिद्धान्त शुभ विषयक किसी मान्यता पर आधारित होते हैं तथा यह स्वीकार किया जाता है कि कर्मों के चयन अथवा औचित्य का आधार स्वीकार्य सिद्धान्त सम्मत शुभत्व का पोषक होना होता है। इसके विपरीत यदि प्रश्न शुभ, उचित इत्यादि नैतिक शब्दों के अर्थ का हो तो यह अधिनीतिशास्त्र का विषय बन जाता है। यह सर्वस्वीकार्य है कि नीतिशास्त्र का परम सरोकार नैतिक व्यवहार का नियमन है अत: कर्मों के चयन अथवा वास्तविक नैतिक स्थिति में नैतिक निर्णय का प्रश्न सर्वोपरि रहता है।

जहाँ तक सिद्धान्तों का प्रश्न है, विचारकों द्वारा अनेक नैतिक सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए हैं। प्रतिपादित नैतिक सिद्धान्त सामान्यत: या तो कर्तव्य नीतिशास्त्र से सम्बन्धित परिणाम निरपेक्ष नीतिशास्त्र की श्रेणी में आते हैं अथवा परिणाम केन्द्रित परिणामवादी नैतिक सिद्धान्त के रूप हैं। इस प्रकार परिणाम निरपेक्ष सिद्धान्त तथा परिणामवादी सिद्धान्त नैतिक सिद्धान्त के दो प्रमुख प्रकार हैं। यद्यपि एक भिन्न प्रकार का नैतिक सिद्धान्त, जिसे हम सद्गुण सिद्धान्त कहते हैं, भी हमें परम्परा द्वारा प्राप्त होता है। सद्गुण सिद्धान्त, परिणामवादी निरपेक्षता अथवा परिणामवाद के स्थान पर कर्त्ता के चरित्र तथा नैतिक प्रतिबद्धता को अधिक महत्त्व देता है। नीतिशास्त्र के इतिहास में यह सद्गुण सिद्धान्त विगत वर्षों में अपेक्षाकृत रूप से प्राय: गौण रहा है।[1]

नीतिशास्त्रीय सिद्धान्त की यह भी स्वाभाविक माँग होती है कि वह सार्वजनीन एवं सर्वस्वीकार्य होना चाहिए। किन्तु प्रमुख सिद्धान्तों के मौलिक भेद तथा इनके समर्थक विचारकों के मध्य परस्पर विवाद ही पर्याप्त रूप से यह दर्शाते हैं कि

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ISBN-13-978-81-932632-1-1

''फिलॉसोफिकल प्रैक्सिस, काउन्सलिंग एण्ड स्पिरिट्यूअल हीलिंग सोसाइटी, जयपुर'' (रजिस्ट्रेशन संख्या 477) की स्थापना सन् 2000 ई. में हुई। इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य दर्शनशास्त्र को महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयीय कक्षाओं तक सीमित न रखकर आम आदमी के जीवन की दैनन्दिन समस्याओं से जोड़ना, नैतिक मूल्यों एवं मानवीय गरिमा में वृद्धि करना, व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास में सहायता करना तथा धर्म-संकट एवं जीवन की समस्याओं के समाधान में परामर्श प्रदान करना है । इसके साथ-साथ ज्ञान की विभिन्न विधाओं जैसे चिकित्सा, शिक्षा, व्यवसाय, परिवेश एवं सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में दार्शनिक चिन्तन को बढ़ावा देना तथा दार्शनिक परामर्श में रुचि रखने वाले दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देना भी संस्था का महत्त्वपूर्ण कार्य है।

फिलॉसोफिकल प्रैक्सिस, काउन्सलिंग एण्ड
स्पिरिट्यूअल हीलिंग सोसाइटी, जयपुर (राज.)